क्या है नारी का अस्तित्व

अनीता प्रसाद,
राजसं; रूड़की

क्या है नारी? नारी शब्द का अर्थ क्या है जब ईश्वर ही नहीं जान पाया तो मनुष्य कैसे इसके वास्तविक अर्थ को समझ पायेगा। नारी के वजूद को समझना उतना ही मुश्किल है जितना आकाश के अनंत स्वरूप को। कुछ लोग नारी को अबला मानते हैं क्योंकि कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ नारी बहुत कमजोर पड़ जाती है या यूँ कहें कि कमजोर कर दी जाती है, मगर प्राचीन युग से लेकर आज के समय तक नारी ने कई क्षेत्रों में अपने आपको सबल बनाकर अपने वजूद को एक नया आयाम दिया है।

आज भी मेरे कानों में मेरे माँ के कहे हुए शब्द गूंजते हैं। जब मैं खुद को बहुत ज्यादा कमजोर और हीन महसूस कर रही थी तब माँ ने कहा था कि बेटी धरती और नारी दोनों एक समान होती हैं माँ के कहने का तात्पर्य मैं भली-भाँति समझ चुकी थी कि मुझे कई कठिनाइयों का सामना करते हुए आगे बढ़ना है तभी मैं सबल और सशक्त बन पाऊँगी।

हमारा इतिहास आज भी गवाह है कि हमारे देश में झाँसी और पन्ना जैसी भी वीरांगनाएं थी जिन्होंने खुद को तो मिटा दिया मगर अपने अस्तित्व को आज भी लोगों के दिलों में कायम की है। आज हर क्षेत्र में नारी केवल आगे बढ़ने की बात ही नहीं करती, बल्कि बढ़ के दिखा भी रही है। आज कौन सा क्षेत्र है जहाँ नारी ने अपनी मिसाल कायम नहीं किए हों, मगर कुछ अधर्मी और नीच व्यक्तियों के कारण आज नारी अस्मत दाग-दाग हो रही है। मगर नारी भी हिम्मत हारने वालों में से नहीं है वह हर कठिनाईयों का सामना करते हुए खुद को इतना अडिग और अचल बना रही है कि कोई उसे डिगा न सके ।

मैं भी एक नारी हूँ और नारी होने के नाते मैं समाज के हर तत्व से यह कहना चाहती हूँ कि कोई भी ये न भूले कि नारी केवल पुरूषों को जन्म देने वाली ही नहीं बल्कि हर सभ्यता और संस्कृति को भी जन्म देने वाली है। वही इस संसार की आधार है।

******

संगठन में शक्ति, अपूर्ण को पूर्ण बनाती है।
-श्रीमद् भागवत